प्रारंभिक साक्षरता के लिए एक अवधारणात्मक रूपरेखा की ओर : एक संतुलित और सामाजिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण

कीर्ति जयराम

ऑर्गनाइज़ेशन फॉर अर्ली लिटरेसी प्रमोशन, दिल्ली

परिचय

स्वतंत्रता प्राप्ति के साठ साल बाद भी भारत में बड़ी संख्या में बच्चे रटने की प्रवृत्ति के साथ ही अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करते नज़र आते हैं । किसी व्यावहारिक अर्थ में उन्हें स्वतंत्र पाठक और लेखक नहीं कहा जा सकता । यह शोध पत्र उन बच्चों की विशेष आवश्यकताओं पर केंद्रित है जिन्हें घर पर पढ़ने और लिखने के लिए कोई सहयोग प्राप्त नहीं है, और जिन्हें अपने घर और सामाजिक परिवेश की मौखिक संस्कृतियों (oral cultures) से स्कूल की प्रिंट आधारित संस्कृतियों (print based cultures) तक, सहज और सार्थक रूप से पहुँचने के लिए सहयोग की आवश्यकता है ।

यह पत्र प्रारंभिक साक्षरता (Early Literacy) के लिए एक संतुलित और सामाजिक रूप से संवेदनशील अवधारणात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का प्रस्ताव रखता है । यह रूपरेखा संसाधन-विहीन कक्षाओं में बच्चों के साथ निरंतर काम करते हुए और वर्तमान साहित्य व प्रारम्भिक साक्षरता के लिए भारत में लागू किए जा रहे नवाचारी कार्यक्रमों के साथ जुड़ाव से मिली समझ के आधार पर विकसित की गई है । यह इस विचार पर आधारित है कि बच्चों को किताबों के साथ सार्थक और सामाजिक रूप से प्रासंगिक जुड़ाव के साथ-साथ प्रिंट-आधारित विविध प्रकार की पठन व लेखन गतिविधियों में सक्रिय व सोद्देश्य जुड़ाव के अवसरों की ज़रूरत होती है। यह रूपरेखा ये मानती है कि बच्चों द्वारा बोले जाने वाली भाषा और वास्तविक दुनिया के उनके अनुभवों जैसे समृद्ध संसाधनों का उपयोग किए जाने की आवश्यकता है जिन्हें बच्चे अपने साथ कक्षा में लेकर आते हैं। इसके साथ ही, यह रूपरेखा ध्वनियों की समझ, वर्णमाला ज्ञान, शब्द-भंडार (vocabulary) और पठन बोध की रणनीतियों (comprehension strategies) को सीखने के स्पष्ट व विकासात्मक रूप से उपयुक्त अवसर/निर्देश भी प्रदान करती है ।

भारतीय संदर्भ

पढ़ने और लिखने की मजबूत नींव, अगली पीढ़ी के युवा शिक्षार्थियों (young learners) को स्कूली शिक्षा और वैश्विक दुनिया की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम बनाने में केन्द्रीय भूमिका निभाती है । हालाँकि भारतीय शैक्षणिक सन्दर्भ मेंइस बारे में अभी भी पर्याप्त स्पष्टता नहीं है। भ्रम और एक तरह के 'खुल्लम खुल्ला' माहौल में शुरुआती स्तर के शिक्षार्थियों को पढ़ना और लिखना सिखाने के परस्पर विरोधी दृष्टिकोण एक साथ चलन में हैं। शुरुआती स्तर पर पढ़ने और लिखने की ये पद्धतियाँ आमतौर पर बच्चों के सीखने की प्राकृतिक प्रक्रियाओं और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित नहीं होतीं। इसकी बजाय इनमें व्यावहारिकता एवं प्रबंधन के मुद्दों से प्रेरित होने की प्रवृति ज़्यादा होती है । काफी पहले 1993 में ही यशपाल समिति ने अपनी रिपोर्ट 'लर्निंग विदआउट बर्डन' (Learning without Burden) में भारतीय स्कूलों में सीखने - सिखाने की निरर्थक और आनंदविहीन प्रकृति पर प्रकाश डाला था, और कक्षा में पठन बोध के अभाव की समस्या को दृढ़ता से उठाया था । लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के साठ साल बाद भी भारत में प्रारंभिक साक्षरता के क्षेत्र में शोध का अभाव है, और स्कूली दक्षता, बच्चों का स्कूल में ठहराव एवं कक्षा में भागीदारी जैसे मुद्दे गंभीर चिंता का विषय बने हुए हैं (गोविंदा, 2007) ।

पिछले पैराग्राफ़ में उल्लिखित कुछ गंभीर चिन्ताओं के आधार पर अप्रैल 2011 में सर रतन टाटा ट्रस्ट ने प्रारंभिक साक्षरता पर एक परामर्श का आयोजन किया था । इस परामर्श का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था प्रारंभिक साक्षरता और प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रमों (Elementary Education programmes) में अवधारणात्मक स्पष्टता को बढ़ावा देना । इस परामर्श के बाद, चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए प्रारंभिक साक्षरता के लिए सामाजिक रूप से संवेदनशील और संतुलित दृष्टिकोण की एक अवधारणात्मक रूपरेखा तैयार की गई । यह पत्र प्रारम्भिक साक्षरता पर मौजूदा चिन्तन के सन्दर्भ में इस परामर्श से निकली प्रारंभिक साक्षरता की अवधारणात्मक रूपरेखा को प्रस्तुत करेगा ।

प्रारंभिक साक्षरता पर वर्तमान चिन्तन

सार्थक पढ़ने और लिखने की नींव जीवन के शुरुआती कुछ वर्षों में ही रखी जाती है । अस्सी और नब्बे के दशकों के दौरान, प्रारंभिक पठन–लेखन के क्षेत्र में 'उद्गामी साक्षरता का दृष्टिकोण' (Emergent Literacy perspective) हावी था (टीले और सल्ज़बी 1986) । उनके अनुसार, बच्चे बहुत कम उम्र में ही पठन-लेखन की विभिन्न प्रकार की अनौपचारिक दैनिक गतिविधियों में अपने से बड़ों और अन्य बच्चों का अवलोकन करके, उनसे परस्पर क्रिया करके और इनमें सक्रिय रूप से भाग लेकर, पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से सीखना शुरू कर देते हैं। इन गतिविधियों में अखबार पढ़ने की नकल करना, वस्तुओं के चित्र बनाना, बेतरतीब रेखाएँ बनाना, काल्पनिक

खरीदारी की सूचियाँ बनाना, लेबल और साइनबोर्ड पढ़ना, कहानियाँ सुनना आदि शामिल हो सकते हैं । जैसे - जैसे छोटे बच्चे (pre-schoolers) अपने घरों और सामाजिक परिवेश में प्रिंट - आधारित गतिविधियों का अवलोकन करते हुए अनौपचारिक रूप से उनमें भाग लेते हैं, वैसे - वैसे वे प्रिंट को जानना व समझना शुरू कर देते हैं । उदाहरण के लिए, वे यह महसूस करने लगते हैं कि लिखित प्रतीकों के अपने अर्थ होते हैं, और बोली जाने वाली ध्वनियों (spoken sounds) तथा लिखित भाषा प्रतीकों के बीच एक संबंध होता है । वे स्वयं कुछ लेखन परम्पराओं को 'अपना लेते' हैं, जैसे - एक दिशा में, पृष्ठ पर बाएँ से दाएँ घसीटते हुए काल्पनिक शब्द लिखना । बच्चे काल्पनिक संदेश लिखते हैं जिनमें उनके अनुसार कुछ शब्द या वाक्य हो सकते हैं । किसी ने भी बच्चे को लेखन के इन विभिन्न स्वरूपों के बारे में नहीं सिखाया है । वे स्वयं उन्हें अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों से ठीक वैसे ही सीख लेते हैं, जैसे वे अपने परिवेश से बोली जाने वाली भाषा को सीखते हैं ।

गॉर्डन वेल्स (2003) इन शुरुआती अनुभवों को साक्षरता की विस्तारित 'प्रशिक्षु' अवस्था कहते हैं, जिसके माध्यम से स्कूल न जाने वाले छोटे बच्चे अपने परिवार के साक्षर सदस्यों के साथ लिखित सामग्री आधारित गतिविधियों में शामिल होते हैं। प्रिंट सामग्री के साथ ऐसे अनौपचारिक परिचय के चलते ऐसे बच्चों का साक्षरता ज्ञान उन बच्चों की तुलना में कहीं ज़्यादा विकसित होता है जिनका प्रिंट सामग्री से परिचय पहली बार स्कूल में ही होता है। *शुरुआती बचपन में प्रिंट-आधारित अनुभवों तक सभी बच्चों की पहुँच नहीं होती है और इस वजह से स्कूली शिक्षा के लिए अलग-अलग बच्चों की तैयारी में भी अंतर होता है।*

भारत जैसे देश में छोटे बच्चों की बहुत बड़ी संख्या समृद्ध मौखिक परंपराओं या 'गैर-साक्षरता संस्कृतियों' (non literacy cultures) से आते हैं। ऐसे बच्चे उस स्तर की तैयारी के साथ स्कूल में प्रवेश नहीं करते जैसा कि उन बच्चों का होता है जो घर पर पढ़ने और लिखने के विभिन्न रूपों का अनुभव पहले ही कर चुके होते हैं। यह स्थिति इस तथ्य से और भी गम्भीर हो जाती है कि इनमें से कई बच्चे सामाजिक रूप से वंचित समूहों से आते हैं और कभी-कभी उन्हें स्कूली शिक्षा के लिए अनुपयुक्त माना जाता है। इसके अलावा, इनमें से अधिकांश बच्चों के पास पढ़ने और लिखने के लिए घर पर कोई सहयोग करने वाला नहीं होता। ये सभी कारण स्कूल में उनके प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं ।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि सभी बच्चे अपनी दुनिया के वास्तविक अनुभवों व ज्ञान को, और अपने घर की भाषा में दक्षता के साथ स्कूल आते हैं। साथ ही, वे अपनी कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और उद्देश्यपूर्ण कार्य की चाह की प्राकृतिक प्रवृत्तियों को भी स्कूल में लाते हैं। ये संसाधन बच्चों को उनके नए कक्षा अनुभवों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करते हैं। दुर्भाग्य से, कक्षा का सीखने का वातावरण और स्कूली पाठ्यचर्या अक्सर बच्चों को

बाहर के अपने अनुभवों और संसाधनों के उपयोग का पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं करती है । प्रारम्भिक साक्षरता परियोजना (Early Literacy Project) की कक्षाओं में काम करने के दौरान हमने ऐसे कई शुरुआती स्कूली बच्चों के साथ बातचीत की है जो कक्षा के अंदर अपरिचित प्रिंट वातावरण तथा स्कूल की भाषा से डर महसूस करते हैं और जो पढ़ने या लिखने के बिलकुल इच्छुक नहीं हैं ।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

वायगोत्स्की (Vygotsky, 1978) ने इस विचार को सामने रखा कि साक्षरता की शुरुआती जड़ें संवाद के पहले प्रयासों में शुरू होती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि चेहरे के भावों व हावभाव से व्यक्त करना, खेलना, बातचीत करना, चित्रकारी करना, गोंजना और लिखना मूलतः अर्थ बनाने तथा संवाद करना सीखने की एक एकीकृत प्रक्रिया का हिस्सा हैं। उन्होंने रोजमर्रा की अवधारणा निर्माण (everyday concept formation) और वैज्ञानिक अवधारणा निर्माण (scientific concept formation) की प्रक्रियाओं के बीच एक सार्थक संबंध बनाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि बच्चों और वयस्कों के दैनिक जीवन के अनुभवों में निहित रोजमर्रा की अवधारणाएँ औपचारिक निर्देशों के माध्यम से सिखाई जाने वाली वैज्ञानिक अवधारणाओं को सीखने का आधार प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने तर्क दिया कि स्कूलों में सिखाए जाने वाले भाषा रूपों और संरचनाओं का अध्ययन केवल तभी संभव हो सकता है जब बच्चों ने अपने दैनिक अनुभवों और सीखने की प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अपनी बोली जाने वाली भाषा की संरचनाओं को पहले ही आत्मसात कर लिया हो।

भारत में स्कूली साक्षरता के सन्दर्भ में, जहाँ सीखने के नाम पर सामान्यतः रटने और याद रखने पर ही ध्यान दिया जाता है, वायगोत्स्की के विचारों के महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। देश के कोने-कोने में फैले हजारों स्कूलों में शिक्षार्थियों के विविध समूह हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस श्रृंखला के एक छोर पर वे बच्चे हैं जिनके लिए पठन व लेखन घर और समुदाय के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। दूसरे छोर पर बहुत बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे हैं जिनके लिए पढ़ना, लिखना और प्रिंट आधारित गतिविधियाँ उनके दैनिक अनुभव का हिस्सा नहीं हैं ।

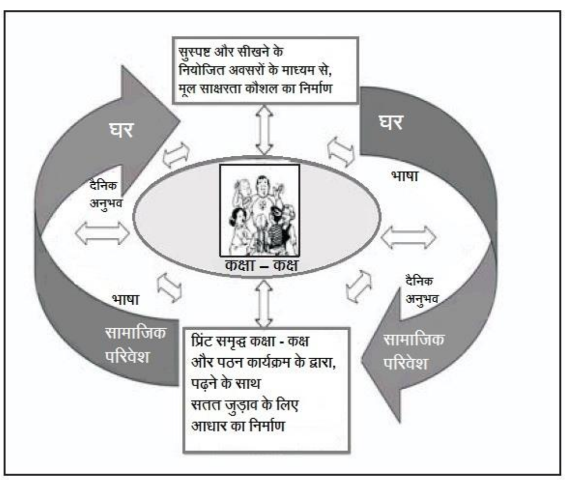
यह दो महत्वपूर्ण बिन्दुओं को उभारता है:

1. यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि पठन – लेखन सीखने के बच्चों के प्राकृतिक तरीकों का सहयोग करने वाले अलग–अलग तरह के अनुभव कक्षा में उपलब्ध हों। हालिया अध्ययनों ने दर्शाया है कि घर और समुदाय आधारित साक्षरता व भाषाई क्रियाओं एवं स्कूल आधारित क्रियाओं के बीच जितनी समानता होगी बच्चों में सार्थक पठन-लेखन की मजबूत नींव के निर्माण की भी उतनी ही अधिक संभावना होगी।

2. उन बच्चों के सीखने की विशेष जरूरतों को पूरा करने की आवश्यकता है जिनका लिखित शब्दों और प्रिंट आधारित अनुभवों के साथ पहली बार सक्रिय जुड़ाव स्कूल में प्रवेश करने के बाद ही होता है ।

प्रारंभिक साक्षरता के लिए अवधारणात्मक रूपरेखा

प्रारंभिक साक्षरता परियोजना (Early Literacy Project) ने इस बारे में कुछ स्पष्टता बनाने की कोशिश की है कि पठन क्या होता है और इसे कैसे पढ़ाया जाना चाहिए। यह एक अत्यधिक विवादास्पद क्षेत्र रहा है जहाँ बड़ी संख्या में असंगत और परस्पर विरोधी दृष्टिकोण मौजूद रहे हैं। इस परियोजना ने संसाधनविहीन कक्षाओं में सार्थक पठन व लेखन को बढ़ावा देने में सहायक पद्धतियों एवं अनुकूल वातावरण को विकसित करने के लिए लम्बे समय तक बहुत गहनता से काम किया है। इनमें साक्षरता सीखने वाले पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को देवनागरी लिपि की ध्वनियों तथा प्रतीकों को समझने के लिए आवश्यक भाषाई ज्ञान व कौशलों, और अर्थ निर्माण के लिए आवश्यक संज्ञानात्मक कौशलों (cognitive skills) से सुसज्जित करना शामिल है ।



प्रारंभिक साक्षरता के लिए एक अवधारणात्मक रूपरेखा

प्रारंभिक साक्षरता की रूपरेखा के मुख्य उद्देश्यों में से एक है कक्षा में ऐसा वातावरण बनाना और ऐसी पद्धतियाँ विकसित करना जो वंचित और गैर - साक्षर पृष्ठभूमि के बच्चों को समझकर पढ़ने और लिखने की एक मजबूत नींव बनाने में सक्षम बनाता है (यहाँ पर हिन्दी भाषा में)। इसका उद्देश्य पठन – लेखन की प्रक्रियाओं को आनंददायक और सार्थक बनाकर बाल शिक्षार्थियों का इससे टिकाऊ जुड़ाव बनाना भी है। यह रूपरेखा बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं और उनके दैनिक जीवन के अनुभवों को भी प्रधानता देती है । इसका अर्थ है कक्षा के भीतर बच्चों को

उनके जीवन के वास्तविक अनुभवों और विचारों को कई तरीकों से साझा करने के अवसर प्रदान करना, ताकि बच्चे अपनी वास्तविक भावनाओं, चिंताओं, विचारों और कल्पनाओं को अपने शब्दों में और अलग - अलग तरीकों से साझा करने एवं व्यक्त करने में स्वतंत्र महसूस करें ।

प्रमुख विशेषताएँ

- प्रारंभिक साक्षरता की यह अवधारणात्मक रूपरेखा, बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संसाधनों से तैयार की गई है। इसके पीछे यह समझ है कि मौखिक भाषा बच्चे की प्रारंभिक साक्षरता के विकास की आधारशिला रखती है ।
- यह रूपरेखा बच्चों और कक्षा के भीतर उनकी विविध व्यक्तिगत जरूरतों को केंद्रीय स्थान देती है ।
- यह बच्चों की प्राकृतिक रूप से सीखने की प्रक्रियाओं और अनुभव की जाने वाली दुनिया का अर्थ समझने की मनुष्यों की अन्तर्जात इच्छा को महत्व देती है।
- यह सहयोगी प्रिंट सामग्री से भरपूर एक सुनियोजित कक्षा में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को सम्भव बना कर बच्चों की प्राकृतिक रूप से सीखने की प्रक्रियाओं को जगह देती है। इस तरह यह साक्षरता के आधार के निर्माण का अवसर देती है ।
- यह ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण (Phonological processing) और शब्द पहचान के साथ - साथ अर्थ बनाने की विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक मुख्य साक्षरता कौशलों के स्पष्ट शिक्षण पर भी ध्यान केंद्रित करती है ।
- इसका उद्देश्य कक्षा में सीखने के क्रियाकलापों और बच्चों के घर तथा दुनिया के वास्तविक अनुभवों के बीच सतत दो-तरफ़ा प्रवाह में मदद करके घर से स्कूल के संक्रमण में सहयोग करना है।
- यह स्वतंत्र और सक्रिय पाठक एवं लेखक बनने की प्रक्रिया में बाल साहित्य व परिवेशीय प्रिंट सामग्री की भूमिका को मान्यता देती है ।

मुख्य घटक

उपरोक्त रूपरेखा को मोटे तौर पर दो मुख्य घटकों में विभाजित किया गया है । ये हैं :

क) पढ़ने - लिखने के साथ सतत और सार्थक जुड़ाव के लिए नींव बनाने और उसे मजबूत करने पर ध्यान केन्द्रित करना;

ख) ध्वनि/ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण तथा अर्थ बनाने के लिए बुनियादी साक्षरता कौशल के निर्माण पर ध्यान देना ।

क) पढ़ने - लिखने के साथ सतत जुड़ाव की नींव बनाने पर ध्यान देना

निम्नलिखित हस्तक्षेपों के माध्यम से:

1) *प्रिंट सामग्री से भरपूर कक्षा का सुनियोजित और सक्रिय उपयोग*

एक प्रिंट समृद्ध कक्षा के कुछ ज़रूरी तत्व

- कक्षा की लेबलिंग
- बच्चों के लेख, चित्रकारी, संग्रह सामग्रियों आदि का समय-समय पर बदल कर प्रदर्शन करना
- विभिन्न प्रकार की लिखित सामग्री और टाइटिल के साथ चित्रों आदि का समय-समय पर बदल कर प्रदर्शन करना
- विशेष फोकस वाले क्षेत्र जैसे:

  - किताबों का कोना

  - कविता कोना

  - सूचना पट्ट (इसके तहत रोज़ सुबह एक सार्थक और सरल संदेश को शामिल किया जा सकता है)

  - शब्द - दीवारें (word walls)
- उपरोक्त क्षेत्रों में और जहाँ भी संभव हो, लिखित निर्देश और टाइटिल
- उन्मुक्त लेखन और चित्रकारी के लिए स्थान

कुछ ऐसे तरीक़े जिनसे प्रिंट समृद्ध कक्षा सार्थक पठन व लेखन की बुनियाद बना सकती है इस प्रकार हैं:

2) *साहित्य और सूचनात्मक लेखों तक पहुँचाने वाला एक पठन कार्यक्रम*

एक सार्थक पठन कार्यक्रम के कुछ महत्वपूर्ण घटक हैं:

- विभिन्न प्रकार की किताबों और बाल - साहित्य (काल्पनिक और ग़ैर-काल्पनिक) से जुड़ने का अवसर
- साहित्य पर विभिन्न तरीकों से अपनी प्रतिक्रिया देने का अवसर

i) सौंदर्यबोध (Aesthetic) - पाठ का अनुभव करने और अपनी भावनाओं, कल्पनाओं तथा अन्य अनुभवात्मक अभिव्यक्तियों के ज़रिए प्रतिक्रिया देने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ पढ़ना ।

ख) अपवाही पठन (Efferent) – अपने ज्ञान को बढ़ाने या प्रश्नों के उत्तर देने, तथ्यों का पता लगाने, अंतराल को भरने, सारांशित करने इत्यादि के लिए पाठ से जानकारी निकालने के उद्देश्य से पढ़ना ।

- आकर्षक ढंग से आपसी चर्चा करते हुए मुखर वाचन (read aloud) के ज़रिए पाठ सुनने के अवसर
- पठन सामग्री व किताबों पर प्रतिक्रिया देने, उन पर चर्चा करने और साझा करने के अवसर
- विभिन्न विधाओं और विभिन्न प्रकार के पाठों, जैसे - 1) आख्यान 2) कविताएँ 3) सूचना वाली किताबें व लेख 4) निर्देश 5) वर्णनात्मक लेख, जो विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं या उनके पक्ष में तर्क देते हैं, का उपयोग करने और उनको समझने के अवसर

तालिका 1: एक प्रिंट समृद्ध कक्षा के लिए ज़रूरी तत्व और पठन - लेखन के जिन बुनियादी कौशलों तथा प्रवृत्तियों के विकास में ये तत्व सहयोग करते हैं उनका विवरण -

प्रिंट के तत्व और/या प्रिंट समृद्ध कक्षा पर आधारित गतिविधियाँ	**उनके तदनुरूप पठन - लेखन की बुनियादी अवधारणाएँ, कौशल और प्रवृत्तियाँ**
कक्षा में बातचीत के आधार : कक्षा में प्रदर्शित सामग्रियाँ, कविताएँ, लिखित सामग्री, चित्र।	प्रदर्शित सामग्रियों के आधार पर **मौखिक** भाषा के विभिन्न उपयोग।
उन्मुक्त लेखन, चित्रकारी और काल्पनिक खेल गतिविधियों के लिए गुंजाइश	चित्रकारी और उन्मुक्त लेखन के माध्यम से **रचनात्मक अभिव्यक्ति;** **प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के सहज अनुभव** जैसे- पठन - लेखन को खेल और काल्पनिक क्रीड़ा में शामिल करना; नाटकीय रूपांतर; चित्रकारी, कहानी

	बनाना आदि ।
विभिन्न प्रकार की वास्तविक पठन सामग्री जैसे, तरह-तरह के लेबल, समाचार - पत्र, विज्ञापन आदि का प्रदर्शन ।	प्रिंट सामग्री का सार्थक और मज़ेदार तरीकों से सहज रूप में उपयोग करते हुए **ज्ञान और शब्द - भंडार (vocabulary) की समृद्धि**
पढ़ने / किताबों का कोना किताबों और बच्चों की कहानियों / लेखों / चित्रकारी का प्रदर्शन सार्थक रूप से पढ़ने के अनौपचारिक और सहज अवसर	किताबों और कहानियों का **आनंद लेना** किताबों पर चर्चा, कहानी पाठ, मुखर वाचन सत्र, और किताबों से जुड़ने के विभिन्न तरीकों से पढ़ने की **अभिप्रेरणा (motivation)**
प्रदर्शित प्रिंट पर आधारित भाषा के विभिन्न खेल	**विभिन्न रोचक तरीकों से मौखिक और लिखित भाषा के साथ जुड़ाव**
शब्द दीवार (word wall)	**तुकांत शब्दों, शब्द गतिविधियों और शब्द खेलों द्वारा ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण (phonological processing), शब्द पहचान और अर्थ निर्माण में सहयोग**
मुखर वाचन सत्र में शिक्षक द्वारा स्वयं प्रदर्शन करके दिखाना	**प्रिंट सम्बन्धी अवधारणाओं को विकसित करना, या प्रिंट सामग्री की बुनियादी परिपाटियों को समझना** जैसे - किसी किताब को कैसे संभालना है या किसी पृष्ठ पर लिखे शब्दों को किस क्रम में पढ़ना है; पुस्तक के शीर्षक / कवर को समझना; दिशात्मकता, बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे पढ़ना; अनुस्थिति; 'शब्दों' की अवधारणा, शब्दों के बीच स्थान; विराम चिह्न / लय के साथ पढ़ना; कार्यक्षमता; सार्थकता ।

लेबलिंग, लिखित निर्देश और चित्र शीर्षक	**प्रिंट सामग्री के प्रति जागरूकता बढ़ाना** – हर जगह प्रिंट सामग्री पर ध्यान देना; यह समझना कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए अलग - अलग सार्थक तरीकों से इनका उपयोग कैसे किया जाता है। इनके उपयोग को सक्रिय रूप से सुगम बनाना
नाम प्रदर्शन और / या उपस्थिति चार्ट	**अक्षर नामकरण** – यह समझना कि सभी अक्षरों के नाम होते हैं और ये आकृति एवं ध्वनियों में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वर्णमाला के खेल, वर्गीकरण गतिविधियाँ, आदि ।
ब्लैकबोर्ड और चार्ट	**लिखित निर्देशों का पालन करना,** **पढ़ना और करना,** बच्चों द्वारा बनाए गए मौसम चार्ट, कैलेंडर आदि पर आधारित गतिविधियाँ ।
बच्चों के काम का प्रदर्शन	**आत्मविश्वास और एक सकारात्मक आत्म छवि के निर्माण में सहयोग** ताकि बच्चों में आत्मविश्वास आए, वे नई कठिनाइयों से जूझने के इच्छुक हों और नई चीजें सीखने के लिए उत्साहित हों
पठन - लेखन के उपयोग के विभिन्न तरीकों का शिक्षक द्वारा प्रदर्शन	**पठन - लेखन के उपयोग के विभिन्न सार्थक तरीकों का अनुभव प्रदान करना**

- प्रदर्शित प्रामाणिक पठन सामग्रियों जैसे संदेशों, पत्रों, समाचार - पत्र की कतरनों और विज्ञापनों, निमंत्रण - पत्रों, पोस्टरों, बस टिकट, लेबल्स इत्यादि को देखने-समझने और उनका उपयोग करने के अवसर
- खास शब्दों (key words) की पहचान करने, प्रमुख विचारों की पहचान करने, प्रारूप बनाने तथा सारांश करने जैसे कौशलों के निर्माण के लिए निश्चित विषय क्षेत्र की सामग्रियों को पढ़ने के अवसर

- पाठ की विषयवस्तु के बारे में विचार व्यक्त करने और प्रश्न उठाने के अवसरों के माध्यम से चिंतनशील (reflective) पठन के लिए सहयोग
- किताबों के साथ स्वतंत्र रूप से और आनंद के साथ जुड़ने के अवसर

ख. साक्षरता के केन्द्रीय कौशलों का निर्माण - ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण और अर्थ निर्माण के लिए

एक प्रिंट समृद्ध वातावरण से अनुभव के साथ-साथ, लिपि ज्ञान के निर्माण और साक्षरता के कुछ केन्द्रीय कौशलों के विकास के लिए, सुनियोजित अवसर प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है । इन्हें उद्देश्यपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने की जरूरत है । कुछ प्रमुख साक्षरता कौशल[1] (literacy skills) जिन्हें स्पष्ट रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है, वे हैं:

1. स्वनिमों की समझ (Phonemic Awareness) - यह बोले गए शब्दों के अलग-अलग हिस्सों की ध्वनियों पर ध्यान देने, उनके बारे में सोचने और उनके साथ काम करने की क्षमता है। शोध बताते हैं कि बच्चे भाषा की ध्वनियों को एक प्रवाह में सुनते हैं और अक्सर उन्हें शब्दोंं की सीमाओं की समझ नहीं होती है । उन्हें मौखिक भाषा की बड़ी इकाइयों जैसे शब्दांशों (syllables) और शब्दों की पहचान सीखने की आवश्यकता होती है । उन्हें यह समझने में मदद के लिए विशेष गतिविधियों की आवश्यकता होती है कि शब्द, उच्चारित ध्वनियों (Speech sounds) या स्वनिमों (Phonemes) से बने होते हैं ।

2. ध्वनि विज्ञान (Phonics) - यह लिखित अक्षर आकृतियों (प्रतीकों) और उनकी ध्वनियों (स्वनिम) के बीच के संबंध से जुड़ा हुआ है । ध्वन्यात्मक समझ के साथ-साथ, बच्चों को ऐसी विशेष गतिविधियों की आवश्यकता होती है जो उन्हें ध्वनि यानी लिखित वर्णों और शब्दांशों की प्रतीकात्मक सादृश्यता को समझने में मदद करती हैं । इस ज्ञान का उपयोग पढ़ने और उच्चारण करने के लिए कैसे किया जा सकता है ध्वनि विज्ञान बच्चों को यह भी सिखाता है।

लिखित शब्दों को पहचानने की प्रक्रिया के लिए उपरोक्त दोनों मूल कौशल आवश्यक हैं ।

3. शब्द पहचान और शब्द भंडार – ये लिखित शब्दों को पहचानने, समझने और स्वयं उनका निर्माण करने की बच्चे की क्षमता को दर्शाता है । व्यापक शब्द भण्डार बच्चों को समझ के साथ पढ़ने व लिखने में और साथ ही लिखते समय स्वयं को बेहतर ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है ।

4. बोध (Comprehension) - यह समझ के साथ पढ़ने-लिखने की बच्चे की क्षमता को दर्शाता है । पढ़ना एक निष्क्रिय गतिविधि नहीं है। अर्थ निर्माण की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से संलग्न होने के लिए अच्छे पाठक विभिन्न प्रकार की रणनीतियों का उपयोग करते हैं । पठन का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं ने समझने की विभिन्न रणनीतियाँ विकसित की हैं जो बच्चों को समझ के साथ पढ़ने व लिखने और सफल एवं स्वतंत्र पाठक बनने में मदद करने के लिए सिखाई जा सकती हैं ।

5. धाराप्रवाहिता (Fluency) - यह सटीक ढंग से, शीघ्रता से और प्रवाह के साथ पढ़ने और लिखने की क्षमता होती है । धाराप्रवाह पढ़ने के लिए शब्द पहचान और डिकोडिंग में निपुणता की आवश्यकता होती है । इससे पढ़ने की प्रक्रिया में गति और यांत्रिकता (automaticity) आती है और बच्चों को समझ के साथ पढ़ने में मदद मिलती है । धाराप्रवाह पाठक, लय और भाव के साथ अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ते हैं ।

शिक्षक / अनुवर्तनकर्ता की भूमिका

एक शिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह पढ़ने - लिखने के लिए सार्थक और उद्देश्यपूर्ण तरीकों को प्रोत्साहन देने के दौरान बच्चों की प्राकृतिक रूप से सीखने की प्रक्रियाओं, उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उसकी व्यक्तिगत विशिष्टताओं के प्रति संवेदनशील हो ।

इसके लिए शिक्षक को निम्नलिखित बिन्दुओं पर संवेदनशील और दक्ष होने की आवश्यकता है:

- यह समझना कि विश्वास और आपसी सम्मान का रिश्ता सीखने - सिखाने की किसी भी अर्थपूर्ण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है ।

- बच्चों के प्रति संवेदनशील होना और बच्चों के प्रति अपने व्यवहार पर चिंतन-मनन करने होने में सक्षम होना ।
- कक्षा की विविधता के साथ जुड़ने, बच्चों तथा उनके माता - पिता की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रति सम्मान रखने और सीखने - सिखाने का एक साझा माहौल निर्मित करने में सक्षम होना ।
- बच्चों और उनकी भाषा तथा सीखने की प्रक्रियाओं को समझना जिससे वह नई पहल करने में सक्षम हो सके और सिर्फ दिए गए निर्देशों को यांत्रिक रूप से लागू ना करे ।
- छोटे बच्चों को प्रभावी, संवेदनशील मगर दृढ़ता के साथ सम्भालने का कौशल विकसित करना।
- विभिन्न पठन और लेखन क्रियाओं को प्रदर्शित करने में सक्षम होना ।

निष्कर्ष

ऊपर प्रस्तुत की गई संतुलित और सामाजिक रूप से संवेदनशील अवधारणात्मक रूपरेखा इस आधार पर टिकी है कि बच्चों को किताबों से सार्थक और सामाजिक रूप से जोड़ने की आवश्यकता है । साथ ही, विभिन्न प्रकार के प्रिंट आधारित पठन – लेखन गतिविधियों के साथ सक्रिय और उद्देश्यपूर्ण रूप से जोड़ने के विभिन्न अवसर देने की आवश्यकता है । इसके अलावा, अधिकांश बच्चों को ध्वन्यात्मक जागरूकता, अक्षरों का ज्ञान, शब्द भण्डार और 'समझने की रणनीतियाँ' सीखने के लिए कुछ स्पष्ट एवं विकासात्मक रूप से उपयुक्त अवसरों / निर्देशों की भी आवश्यकता होती है । यह महत्वपूर्ण है कि इन कौशलों का स्पष्ट शिक्षण सार्थक और दिलचस्प तरीकों से प्रदान किया जाए ताकि बच्चों में पढ़ने और लिखने की योग्यता बढ़े और वे नीरस, अर्थहीन और यांत्रिक न बनें ।

[1]*प्रारंभिक साक्षरता पर शोध की व्यापक और मौलिक समीक्षा के बाद पठन - लेखन के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण का उदय हुआ था । अधिक जानकारी के लिए नेशनल रीडिंग पैनल, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ एंड ह्यूमन डेवलपमेंट, यूएस डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ एंड ह्यूमन सर्विसेज (2000) की रिपोर्ट देखें: टीचिंग चिल्ड्रेन टू रीड: एन एविडेंस - बेस्ड एसेसमेंट ऑफ द साइंटिफिक रिसर्च लिटरेचर ऑन रीडिंग एंड इट्स इम्प्लीकेशंस फॉर रीडिंग इंस्ट्रक्शन।*

http://www.nichd.nih.gov/publications/nrp/smallbook.htm.

संदर्भ

Government of India. (1993). Yashpal Committee Report: Learning without burden. NewDelhi, India: Ministry of Human Resource Development.

Govinda, R. (2007). Reorienting elementary education. Seminar, 574. Retreived from http:// www.india-seminar.com/semsearch.htm

Teale, W.H. & Sulzby, E. (Eds.). (1986). Emergent literacy: Writing and reading, Norwood, NJ: Ablex.

Vygotsky, L.S. (1978). Mind and society: The development of higher mental processes. M. Cole, V. John-Steiner, S. Scribner & E. Souberman (Eds.). Cambridge, MA: Harvard University Press.

Wells, G. (2003). Children talk their way into literacy. Retrieved from http:// people.ucsc.edu/~gwells/Files/Papers_Folder/ Talk-Literacy.pdf

कीर्ति जयराम, निदेशक, प्रारंभिक साक्षरता परियोजना (ELP), प्रारंभिक साक्षरता संवर्धन संगठन (OELP), नई दिल्ली 110 070 हैं।

keerti_jayaram@yahoo.com